डेढ़ दशक बाद अपनों के पास पहुंची संतोषी बाई

घर-वापसी ससुराल पक्ष ने 15 साल पहले घर से निकाल दिया था, मायके में भी आसरा नहीं मिलने पर मानसिक स्थिति बिगड़ गई थी

नगर संवाददाता | सागर

15 साल पहले शहर से गायब हुई एक महिला को मुंबई के एक एनजीओ ने उसके परिवार से मिलवा दिया। इस महिला को उसके पति व अन्य परिजनों ने ठुकरा दिया था, जिसके बाद उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ गई थी। वापस आने पर पति व भाइयों ने एक बार फिर उसे अपनाने से इन्कार कर दिया, लेकिन उसकी बड़ी बहन उसे आसरा देने के लिए राजी हो गई। इस महिला का नाम संतोषी बाई रैकवार है और वह बंडा के नयाखेड़ा गांव की रहने वाली है।

केरल में पागलपन की स्थिति में मिली थी : मुंबई के 'श्रद्धा पुनर्वास केंद्र' नामक एनजीओ के कार्यकर्ता दास नागर के मुताबिक संतोषी बाई एक साल पहले उनके पास आई थी। उसे केरल की किसी संस्था ने पुलिस से छुड़वाकर यहां भेजा था। श्री नागर के मुताबिक 'सीजोफ्रेनिया' नाम की बीमारी की शिकार संतोषी बाई का हमारे पुनर्वास केंद्र में निःशुल्क इलाज किया गया। जब वह ठीक हो गई तो उसने खुद ही अपना पता बताया। उसका कहना था कि वह बंडा के नयाखेड़ा गांव की है।

सागर। संतोषी बाई (सलवार सूट पहने हुए) अपनी बहन मीरा व एनजीओ के कार्यकर्ता दास नागर के साथ।

पति ने घर से निकाला, मायके वालों ने ठुकराया : श्री नागर के अनुसार संतोषी को उसके पति व ससुराल पक्ष के लोगों ने घर से निकाल दिया था। इसके बाद वह अपने मायके गई तो वहां भी उसे सहारा नहीं मिला। इसी दौरान वह सीजोफ्रेनिया नाम की बीमारी की शिकार हो गई और एक दिन घर से गायब हो गई।

भाइयों ने कहा, हम नहीं पाल सकते : ठीक होने के बाद संतोषीबाई सागर आते समय एनजीओ कार्यकर्ताओं से कहती आ रही थी कि मुझे देखते ही मेरे भाई-बहन खुशी से उछल पड़ेंगे। लेकिन सागर पहुंचने पर उसे निराश होना पड़ा। उसके 5 भाइयों ने एनजीओ कार्यकर्ताओं से कहा कि वह संतोषी को नहीं अपना सकते। वह उसका खर्च नहीं उठा पाएंगे।

बहन ने दिया सहारा : डेढ़ दशक बाद लौटी संतोषी को भले ही उसके सगे भाइयों ने अपनाने से मना कर दिया, लेकिन उसकी बड़ी बहन मीरा ने उसे हाथों-हाथ लिया। मीरा नयाखेड़ा गांव में ही रहती है। उसने एनजीओ कार्यकर्ताओं को भरोसा दिलाया कि वह संतोषी बाई की ठीक तरह से देखभाल करेगी। उसकी जिम्मेदारी लेने पर कार्यकर्ताओं ने संतोषी को उसके हवाले कर दिया।

एनजीओ मुंबई से दवा भेजता रहेगा : एनजीओ कार्यकर्ता श्री दास के मुताबिक संतोषी अब मानसिक रूप से स्वस्थ है, लेकिन उसे सीजोफ्रेनिया से बचाव के लिए कुछ दवाएं लेना पड़ती हैं। चूंकि मीरा की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, इसलिए उसे हर महीने मुंबई से दवाएं भेजी जाएंगी।

1200 लोगों को पहुंचा चुका है घर

इस एनजीओ का संचालन मुंबई के जाने-माने मानसिक रोग विशेषज्ञ दंपत्ती डॉ. भारत बाटवानी एवं डॉ. स्मृति बाटवानी द्वारा किया जा रहा है। 2006 में शुरू हुए इस एनजीओ ने अब तक 1200 ऐसे लोगों को उनके घरों तक पहुंचाया है, जो मानसिक रूप से बीमार होने के कारण अपने परिवार से बिछड़ गए थे। श्री दास के मुताबिक उनका एनजीओ को देश की विभिन्न व्यापारिक कंपनियों की आर्थिक मदद से संचालित हो रहा है।